अध्याय – 1

संत–वाणी

(अ) कबीरदास

जन्म – सन् 1398 ई.
मृत्यु – सन् 1518 ई.

हिन्दी साहित्य की ज्ञानाश्रयी शाखा के प्रतिनिधि कवि कबीर भक्तिकाल के महान समाज सुधारक थे। उन्होंने समाज में व्याप्त छुआछूत, धार्मिक आडम्बर, ऊँच–नीच एवं बहुदेववाद का कड़ा विरोध करते हुए 'आत्मवत् सर्वभूतेषु' के मूल्यों को स्थापित किया। कबीर की प्रतिभा में अबाध गति व तेज था। उन्हें पहले समाज–सुधारक बाद में कवि कहा जाता है।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने कबीर को वाणी का डिक्टेटर कहा है। कवि ने अपनी सपाटबयानी एवं तटस्थता से समाज–सुधार के लिए जो उपदेश दिए उनका संकलन उनके शिष्य धर्मदास ने किया।

कबीर की रचनाओं के संकलन को बीजक कहा जाता है। बीजक के तीन भाग हैं– साखी, सबद व रमैनी। संत काव्य परम्परा में उनका काव्य हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि है।

पाठ्य पुस्तक में चयनित कबीर के दोहे सदाचार एवं श्रेष्ठ जीवन–मूल्यों को अपनाने की प्रेरणा देते हैं। जीवन में त्याग की महत्ता है। मानव को हंस की तरह नीर–क्षीर विवेक रखना चाहिए। अभिमान त्यागने में सार है। साधु की पहचान जाति से नहीं उसके ज्ञान से होती है। सत्संगति सार्थक होती है। दुराशा सर्पिणी के समान घातक होती है। वाणी में कोयल सी मिठास होनी चाहिए।

त्याग तो ऐसा कीजिए, सब कुछ एकहि बार।
सब प्रभु का मेरा नहीं, निहचे किया विचार ।।

सुनिये गुण की बारता, औगुन लीजै नाहिं।
हंस छीर को गहत है, नीर सो त्यागे जाहिं।।

छोड़े जब अभिमान को, सुखी भया सब जीव।
भावै कोई कछु कहै, मेरे हिय निज पीव।।

जाति न पूछो साधु की, पूछि लीजिए ज्ञान ।
मोल करो तलवार का, पड़ा रहन दो म्यान।।

संगत कीजै साधु की कभी न निष्फल होय ।
लोहा पारस परस ते, सो भी कंचन होय ।।

मारिये आसा सांपनी, जिन डसिया संसार।
ताकी औषध तोष है, ये गुरु मंत्र विचार।।

कागा काको धन हरै, कोयल काको देत ।
मीठा शब्द सुनाय के, जग अपनो करि लेत।।

(ब) तुलसीदास

जन्म – सन् 1532 ई.
मृत्यु – सन् 1623 ई.

उत्तर प्रदेश के बांदा जिले के राजापुर गाँव में जन्मे तुलसीदास का बचपन अत्यन्त कठिनाइयों में बीता। कष्टों के दौर से गुजरकर उन्होंने गुरु नरहर्यानन्द व शेष सनातन से शिक्षा ग्रहण की। वे अपनी पत्नी रत्नावली से अति स्नेह रखते थे लेकिन एक दिन रत्नावली द्वारा उत्प्रेरित किए जाने पर उनके हृदय में रामप्रेम जाग्रत हो गया।

तुलसीदास ने अवधी तथा ब्रज भाषा में कई ग्रंथों की रचना की। 'रामचरितमानस' उनकी कीर्ति का आधार ग्रंथ है। अन्य प्रसिद्ध ग्रंथों में विनयपत्रिका, कवितावली, दोहावली, गीतावली, कृष्ण–गीतावली, बरवै रामायण तथा रामलला नहछू प्रमुख हैं।

तुलसी के काव्य में समन्वय की भावना सर्वोपरि है। उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से आदर्श समाज की जो कल्पना प्रस्तुत की है, वह कभी अप्रासंगिक नहीं हो सकती। तुलसी का काव्य भारतीय समाज का आदर्श पथप्रदर्शक है।

पुस्तक में संगृहीत तुलसी के दोहे मानवता की सीख देते हैं। कामक्रोधादि दुर्गुणों से दूर रहना चाहिए। मानव जीवन की सार्थकता परमार्थ में है। मनुष्य अच्छी संगत से अच्छा व बुरी संगत से बुरा बन जाता है। सबसे हिल–मिलकर चलना चाहिए। वक्त प्रतिकूल हो तो मौन रहना श्रेयस्कर है। बुरे समय में धीरज, धर्म, विवेक, साहित्य, साहस, सत्यव्रत व परमात्मा में भरोसा रखना चाहिए।

काम क्रोध मद लोभ रत, गृहासक्त दुःखरूप।
ते किमि जानहिं रघुपतिहिं, मूढ़ परे भव कूप।।

कहिबे कहँ रसना रची, सुनिबे कहँ किए कान।
धरिबे कहँ चित हित सहित, परमारथहि सुजान।।

तुलसी भलो सुसंग तें, पोच कुसंगति सोइ ।
नाउ किंन्नरी तीर असि, लोह बिलोकहु लोइ।।

राम कृपा तुलसी सुलभ, गंग सुसंग समान।
जो जल परै जो जन मिलै, कीजै आपु समान।।

तुलसी या संसार में, भाँति भाँति के लोग।
सबसौ हिल–मिल चालिए नदी–नाव संयोग।।

तुलसी पावस के समय, धरी कोकिलन मौन।
अब तो दादुर बौलिहे, हमें पूछिहै कौन ।।

तुलसी असमय के सखा, धीरज धरम बिबेक।
साहित साहस सत्यब्रत, राम भरोसो एक।।

(स) राजिया रा सोरठा

कृपाराम खिड़िया

जन्म – सन् 1743 ई.
मृत्यु – सन् 1833 ई.

राजस्थानी भाषा के प्रसिद्ध कवि कृपाराम खिड़िया का जन्म तत्कालीन मारवाड़ राज्य के खराड़ी गाँव के निवासी जगराम खिड़िया के यहाँ हुआ था। राजस्थानी भाषा डिंगल और पिंगल के उत्तम कवि व संस्कृत–मर्मज्ञ होने के कारण उन्हें सीकर के राव लक्ष्मण सिंह ने महाराजपुर और लछनपुरा गाँव जागीर में दिए थे। कवि कृपाराम सीकर के राजा देवी सिंह के दरबार में भी रहे।

राजिया कृपाराम जी का सेवक था। एक बार कवि के बीमार पड़ने पर सेवक राजिया ने उनकी खूब सेवा–सुश्रूषा की, जिससे कवि बहुत प्रसन्न हुए। कोई संतान न होने के कारण राजिया बहुत दुःखी रहता था। राजिया के इसी दुःख को दूर कर उसे अमर करने हेतु कवि ने उसे सम्बोधित करते हुए नीति सम्बन्धी सोरठों की रचना की जो हिन्दी व राजस्थानी साहित्य में राजिया रा दूहा या राजिया रा सोरठा नाम से विख्यात है। इन सोरठों ने सेवक राजिया को कवि कृपाराम से भी अधिक लोकप्रिय बना दिया।

प्रस्तुत पाठ में नीति व आदर्श लोक–मर्यादा की सीख देने वाले सोरठों का समावेश किया गया है। कोयल व काग की तुलना कर कवि मीठी वाणी की महत्ता बताता है। शक्कर व कस्तुरी के माध्यम से सौन्दर्य

की तुलना में गुणों को श्रेयस्कर बताता है। दूसरों के कलह व विवाद से लोग आनन्दित होते हैं। हमारा व्यवहार मतलब पर आधारित होता है। मुख पर मधुरता और हृदय में खोट रखने वाले लोगों से आत्मीयता सम्भव नहीं है। मैत्री–निर्वाह हेतु समर्पण व सरलता जरूरी है। श्रीकृष्ण ने अर्जुन के लिए रथ हाँकने तक का काम कर लिया। आजकल हिम्मत की ही कीमत है; हिम्मत–रहित व्यक्ति की कीमत रद्दी कागज–सी हो जाती है।

उपजावै अनुराग, कोयल मन हरखित करै।
कड़वो लागै काग, रसना रा गुण राजिया।।

काळी घणी कुरूप, कस्तूरी कांटां तुलै।
सक्कर बड़ी सरूप, रोड़ां तुलै राजिया।।

डूँगर जळती लाय, जोवै सारो ही जगत।
पर जळती निज पाय, रती न सूझै राजिया।।

मतलब री मनवार, चुपकै लावै चूरमो।
बिन मतलब मनवार, राब न पावै राजिया।।

मुख ऊपर मिठियास, घट मांहि खोटा घड़ै।
इसड़ां सू इखळास, राखीजै नहिं राजिया।।

साँचो मित्र सचेत, कह्यो काम न करै किसो।
हरि अरजण रै हेत, रथ कर हाँक्यौ राजिया।।

हिम्मत किम्मत होय, बिन हिम्मत किम्मत नहीं।
करै न आदर कोय, रद कागद ज्यूं राजिया।।

शब्दार्थ–

तोष – संतोष
कंचन – सोना
कागा – कौआ
औगुन – अवगुण
रत – डूबे रहना
भव – संसार
निज – अपना
परस – स्पर्श
अभिमान – गर्व
नीर – पानी
मूढ़ – मूर्ख
कूप – कुआँ

रसना – जीभ	हित – प्रेम
नाउ – नाव	दादुर – मेंढक
चेत – सावधान	अनुराग – प्रेम
हरखित – आनन्दित	रसना – जीभ
डूँगर – पहाड़	जोवै – देखना
पाय – पैर	घट – हृदय।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. ''आसा साँपनी'' की औषधि है–

(अ) माया (ब) सुख
(स) संपदा (द) संतोष ( )

2. कवि ने 'कस्तूरी' व 'चीनी' के माध्यम से मनुष्य के किन गुणों की ओर संकेत किया है–

(अ) आन्तरिक (ब) बाह्य
(स) आन्तरिक व बाह्य (द) इनमें से कोई नहीं। ( )

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न–

1. हंस के उदाहरण से कवि क्या शिक्षा देना चाहता है ?
2. ''मोल करो तलवार का पड़ा रहने दो म्यान'' से क्या तात्पर्य है ?
3. कबीरदास ने संगति का क्या प्रभाव बताया।
4. ईश्वर प्राप्ति में बाधक अवगुण कौन–कौन से बताए गए हैं ?
5. तुलसीदास के अनुसार इन्द्रियों की सार्थकता किससे संभव है ?
6. कवि के अनुसार मनुष्य के जीवन में संगति का क्या प्रभाव पड़ता है ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. जगत् को वश में करने का क्या उपाय बताया गया है ?
2. कबीरदास की वाणी साखी क्यों कहलाती है ? स्पष्ट कीजिए।
3. 'जाति न पूछो साधु की, पूछि लीजिए ज्ञान।
   मोल करो तलवार का, पड़ा रहन दो म्यान।' पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।
4. ''नदी नाव संयोग''–द्वारा तुलसी ने संसार में जीने का क्या तरीका बताया ?
5. ''राम कृपा तुलसी सुलभ, गंग सुसंग समान'' – पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।
6. ''अब तो दादुर बौलिहे, हमें पूछिहैं कौन'' – में तुलसी का क्या भाव है ?
7. ''पर जळती निज पाय, रती न सूझै राजिया'' – पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।
8. ''मुख ऊपर मिठियास, घट माहि खोटा घड़ै'' – पंक्ति का भावार्थ लिखिए।

निबंधात्मक प्रश्न –

1. ''हिम्मत किम्मत होय ..... रद कागद ज्यूं राजिया'' – दोहे का भावार्थ लिखिए।
   दोहे के माध्यम से मनुष्य के किस गुण की ओर संकेत किया है ?

व्याख्यात्मक प्रश्न –

1. कागा काको धन हरै ..... जग अपनो करि लेत।
2. काम क्रोध मद ..... परे भव कूप।
3. तुलसी या संसार ..... नदी नाव संयोग।

* * * * *